प्रो० रमानाथ झा

जन्म तिथि : 21 सितम्बर, 1906 ई० ।
मृत्यु : 9 दिसम्बर, 1971 ई० ।
जन्म-स्थान : उजान (धर्मपुर), दरभंगा ।
कृति : **मैथिली :**

निबन्ध संग्रह– 'निबन्ध माला' ओ 'प्रबन्ध संग्रह'।
पौराणिक कथा– 'उदयन कथा' एवं 'वररुचि कथा'।
सम्पादित– 'मैथिली पद्य संग्रह', 'मैथिली गद्य संग्रह', 'प्राचीन गीत', 'कथा काव्य', 'नवीन गीत', 'कविता कुसुम', 'कथा संग्रह' आदि ।
व्याकरण– 'मिथिला-भाषा प्रकाश'
अलंकार– 'अलंकार-प्रवेश' ।
हिन्दी– 'मैथिल ब्राह्मणों की पंजी-व्यवस्था'।
अंग्रेजी– 'टेल्स फ्रॉम विद्यापति' एवं 'विद्यापति' ।

परिमार्जित गद्यकार, गम्भीर चिन्तक, आधुनिक साहित्य-विकासक आरम्भिक चरण मे मैथिलीमे शास्त्रीय गवेषणा-आलोचनाक दशा-दिशाक प्रौढ़ निर्देशक, मैथिलीक वर्तनीकेँ बहुमान्य स्वरूप देनिहार, जीवन पर्यन्त अनुशीलन-अनुसंधानमे संलग्न, प्रत्युत्पन्नमतिसँ युक्त प्रखर वक्ता एवं तेजस्वी व्यक्तित्वसँ सम्पन्न साहित्य-रसिक प्रो० रमानाथ झा, शैक्षणिक पृष्ठभूमिक दृष्टिएँ अंग्रेजीक विद्वान रहितहुँ संस्कृत, हिन्दी ओ मैथिली पर सेहो समान अधिकार रखैत छथि। 1930 ई० मे मधेपुर उच्च विद्यालयक प्रधानाध्यापक, 1936 ई० मे दरभंगा राज पुस्तकालयक अध्यक्ष, 1952 ई० सँ 1962 ई० धरि सी.एम. कॉलेज, दरभंगाक अंग्रेजी विभागमे प्राध्यापक एवं तदन्तर बिहार विश्वविद्यालयक मैथिली विभागक अध्यक्ष तथा 1965 ई० मे साहित्य अकादेमी, दिल्लीक मैथिली प्रतिनिधि निर्वाचित भेलाह ओ जीवन पर्यन्त रहलाह । 'मैथिली साहित्य पत्र' नामक मानक त्रैमासिक पत्रिकाक ई प्रतिष्ठापक ओ अधिष्ठातृक रूपमे मैथिली लेखन ओ अनुसंधानकेँ प्रश्रय दैत रहलाह।

पाठ-संदर्भ : प्रस्तुत पाठक चयन **'विविध प्रबन्ध'**सँ कयल गेल अछि, जे अपन मौलिक स्वरूपसँ भिन्न वर्तनीमे रूपान्तरित अछि । एहि गवेषित निबंधमे विद्वान लेखक साहित्य-समीक्षा हेतु समीक्षकमे अपेक्षित अन्तर्दृष्टि, समीक्षाक विभिन्न मानदण्डक संगहि समीक्षकक कतिपय कर्तिक उल्लेख सेहो कयलनि अछि ।

समीक्षा-वृत्ति

समीक्षा ओ साधु तात्त्विक प्रक्रिया थिक जाहिमे लोक कोनहु दर्शनीय वस्तुकेँ देखबाक इच्छा करय, देखय ओ देखिकेँ ओहिमे जे द्रष्टव्य होइक तकरा दोसराकेँ देखयबाक इच्छा करय, देखाबय।

काव्यक समीक्षा काव्यक सहजात थिक। ओना तँ मनुष्यक जहिअहि कण्ठ फुटलैक, ओ बाजय लागल, ओ केवल अपन मनक वृत्ति, अपन उल्लास किंवा व्यथामात्र व्यक्त करय। ओ अभिव्यक्ति आकस्मिक होइक, कखनहु दोसरहुकेँ लक्ष्य कऽ; मुदा जखन मनुष्य अपन मनक अभिव्यक्तिकेँ नाना प्रकारेँ व्यक्त करय लागल, ओहिमे नव नव शैली भरि ओकरा सुन्दर, आकर्षक, ओ प्रभावशाली बनबय लागल तखन सुननिहार कतोकसँ मुग्ध होअय, कतोकसँ घृणा करय। एहीठाम समीक्षाक आरम्भ भेल आ जखन एहि अनुरक्ति किंवा विरक्तिक संग "किएक" एहि प्रश्नक उत्तर प्रस्तुत कयल जाय लागल तखन समीक्षा-वृत्ति अपन वास्तविक रूपमे बढ़य लागल।

संसारमे अनेक एहन पदार्थ अछि जे हमरा हेतु गुणकारी, लाभप्रद, मङ्गलमय, आह्लादजनक ओ मनोरञ्जक भऽ सकैत अछि मुदा से तखनहि जँ केओ ओकर वास्तविक सुन्दरता देखौनिहार हो। जँ कुशल परीक्षक नहि भेल तँ कतेक वास्तविक सुन्दर वस्तु वा सुन्दर रचना अनादृत भऽ जायत, उपेक्षित रहि जायत, तथा परीक्षकक प्रोत्साहन नहि भेटल तँ कलाकारक प्रतिभा, हुनक शक्ति, कुण्ठित भऽ जाइत अछि। ततबे नहि, बहुतो निरर्थक वस्तु वा रचना भ्रमसँ अथवा पक्षपातसँ सुन्दर एवं ग्राह्य बुझल जाय लगैत अछि, अनुचित आदर प्राप्त कऽ लैत अछि। एहिसँ अयोग्यकेँ तँ प्रोत्साहन भेटैत अछि आ जनताकेँ मूल्याङ्कनक एहन भ्रामक कसौटी भेटि जाइत अछि जे तद्द्वारा ओ अनुचितकेँ उचित, अभव्यकेँ भव्य, असुन्दरकेँ सुन्दर एवं त्याज्यकेँ ग्राह्य मानय लगैत अछि। एना संसारमे उचित परीक्षणक विवेक-विपर्यय भेलासँ जीवनक सब क्षेत्रमे अराजकता ओ अनैतिकता व्याप्त भऽ जायत। तेँ

जनताक रुचिकेँ परिष्कृत, व्यवस्थित, संतुलित अथवा विवेकशील बनयबाक निमित्त, बनौने रहबाक निमित्त, कोनहु वस्तु किंवा रचनाक ठीक-ठीक परीक्षण ओ मूल्याङ्कन कयनिहार कुशल समीक्षकक होयब मानव-समाजक सत्प्रवृत्तिक सुरक्षाक हेतु आवश्यके नहि, अनिवार्य सेहो अछि। एतबे नहि, जाधरि ठीक समीक्षा कयनिहार नहि रहत ताधरि कोनहु कलाकृतिक सौन्दर्यक कथा तँ दूर रहओ, लोक ओहि कलाकृतिकेँ किंवा ओकर भेदकेँ चीन्हि समेत नहि सकत।

अतएव मनुष्यक जाहि वाणीसँ सम्पूर्ण विश्वक सब व्यवहार चलि रहल अछि, जाहि वाणीक आश्रयसँ सम्पूर्ण ज्ञान-विज्ञानक प्रसार भऽ रहल अछि, ओहि वाणीमे मनुष्य अभिनव कौशलक प्रयोग कऽ ओकरा आकर्षक बनयबाक निमित्त जे प्रयास कयलक अछि अर्थात् साहित्यक नामसँ ओ जे वाक्सृष्टि कयलक अछि, ओकर उचित परीक्षणक निमित्त सेहो एक गोट शास्त्रक आवश्यकता छैक। यैह थिक ई समीक्षा, सम्यक् रूपसँ ईक्षण। यैह थिक ओ विद्या जाहिसँ साहित्यक उत्पत्ति, ओकर स्वरूप, तथा ओकर सब अङ्ग, उपाङ्ग, तत्त्व, गुण, दोष, प्रभाव, भेद आदिक पूर्ण ज्ञान प्राप्त भऽ सकैत अछि। एही, शास्त्र कहू वा विद्या कहू, तकर आश्रयसँ साहित्यक विभिन्न तत्त्व ओ पक्षक निरीक्षण ओ परीक्षण कऽ ई सिद्ध कयल जाय सकैत अछि जे साहित्यक कोन स्वरूपक अध्ययन कोना कयल जाय, कोन प्रकारेँ ओकर आनन्द अथवा रस लेबाक चाही, कोना ओ किएक ककर ग्रहण करी, ककर परित्याग करी।

समीक्षा-वृत्ति मानव-जातिकेँ स्वाभाविक थिकैक; एकर आधारभूत जे वृत्ति सब छैक से मानव-स्वभावमे निहित छैक। सर्वप्रथम चयन-वृत्ति। छोटो-छोट नेना प्रेय ओ अप्रेय, रुचि ओ अरुचिक वृत्तिसँ सम्पन्न होइत अछि। प्रेय ओ श्रेय तथा अप्रेय ओ अश्रेय एकर भेद किंवा उचित कारण ओ नहि बुझैत अछि, नहि कहि सकत मुदा ई नीक लगैत अछि, ई नहि नीक लगैत अछि, एहि रूपक चयनवृत्ति ओकरहु सतत जाग्रत ओ सचेष्ट रहैत छैक। अपन मनक अनुकूल, अपना रुचिक वस्तुकेँ बीछब, बीछिकेँ ग्रहण करब, चयन-वृत्ति थिक ओ यैह चयन-वृत्ति समीक्षाक आधारभूत एकगोट प्रमुख वृत्ति थिक। दोसर थिक जिज्ञासा-वृत्ति। मनुष्यक स्वभाव थिकैक जे ओ प्रत्येक नवीन अज्ञात किंवा अद्भुत वस्तुक परिचय, उपयोग,

प्रयोग ओ विवरण जनबाक हेतु समुत्सुक रहैत अछि। ई की थिकैक, एहन किएक छैक, एकर प्रयोजन की, एहिसँ की लाभ होयत इत्यादि प्रश्न एही कौतूहलसँ उत्पन्न होइत अछि ओ जाहि वृत्तिसँ ई कौतूहल उत्पन्न होइत अछि से थिक जिज्ञासा-वृत्ति। साहित्यक विषयमे एहि जिज्ञासा-वृत्तिसँ समीक्षाक उदय होइत अछि, ओकर विकास होइत रहल अछि। मानव स्वभावक तेसर वृत्ति जे समीक्षाक आधारभूत अछि से थिक अहं-वृत्ति। ई स्वाभाविक थिकैक जे सबकेँ अपन वस्तु नीक लगैक, अपनासँ सम्बद्ध किंवा अपन प्रिय वस्तुक दोषाविष्करण प्रिय नहि होइक। लोक तँ अपन वस्तुकेँ तत्सदृश आन वस्तु सँ नीक बुझैत अछि। एहि वृत्तिक व्यापार-स्वरूप ई आकांक्षा होइत छैक जे जकरा हम नीक, प्रिय ओ सुन्दर बुझैत छी तकरा आनो नीक, प्रिय ओ सुन्दर बुझय; हम जे कही से सब स्वीकार करय; हमर जे मत अछि वा हम जे कहैत छी सैह शुद्ध ओ सटीक। समीक्षाक मूल प्रेरणाशक्ति यैह अहं-वृत्ति थिक। यैह तीनू वृत्ति कखनहु पृथक् पृथक् कखनहु परस्पर मीलि, समन्वित रूपसँ, कोनहु कलाकृतिक, विशेषतः साहित्यिक कृतिक, परीक्षणक हेतु सहृदयकेँ प्रेरित करैत अछि।

राजशेखर कहने छथि जे जहिना काव्यक कारण प्रतिभा थिकैक ओ साहित्यसर्जनामे कारण-भूत प्रतिभा "कारयित्री" प्रतिभा थिक, तहिना काव्यकृतिक परीक्षणहुक हेतु प्रतिभा चाही जकरा ओ "भावयित्री" प्रतिभा कहैत छथि। परन्तु जेना प्रतिभाक संग संग व्युत्पत्ति ओ अभ्यास सत्साहित्यक कारण मानल जाइत अछि तहिना भावयित्री प्रतिभाक संग संग कतोक आओर गुण अपेक्षित छैक जे समीक्षाकेँ शास्त्रीय मर्यादा प्रदान करैत अछि। समीक्षा क्रियाक हेतु सबसँ विशेष प्रयोजन छैक ओहि हेतु विशेष प्रकारसँ सन्नद्ध होयबाक अर्थात् सबसँ पहिने हुनका गम्भीर अध्ययन चाही। बिनु व्यापक अथ च गम्भीर अध्ययन कयने समीक्षाक क्रिया अनभिज्ञता देखाय समीक्षाकेँ उपहासास्पद बनाय देत। ताहि सङ्ग निष्पक्षता समीक्षाक आत्मा थिक। समीक्ष्य विषयक संग समीक्षकक सहानुभूति आवश्यक छैक मुदा से सहानुभूति रचनासँ हो, रचनाकारसँ नहि, ओ तेँ राग वा द्वेष सँ प्रेरित समीक्षा समीक्षा नहि थिक। तहिना सौन्दर्य-भावनाक संस्कार एक स्वतन्त्र वस्तु थिक जकरहि हम भावयित्री प्रतिभा कहल अछि ओ ताहि सङ्ग अभिव्यक्ति कौशल सेहो ओही प्रतिभाक प्रसाद थिक। एहि कौशलक अन्तर्गत पाँच गोट विचार अबैत

अछि:– ओ जे कहैत छथि से स्पष्ट अछि, शुद्ध अछि, प्रभावशाली अछि, युक्तियुक्त अछि ओ समीक्षाक शैलीसँ भिन्न नहि अछि। समीक्षाक संस्कारमे एहि पाँचो गुणक सत्ता आवश्यक।

कोनहु रचनाक समीक्षामे मुख्यत: समीक्षकक व्यक्तिगत रुचि कारण होइत अछि परन्तु समीक्षाक आधार-भित्ति होइत अछि समाज द्वारा अनुभूत सौन्दर्य-विवेचनक परम्पराक अनुसार निर्मित ओ परिष्कृत रुचि। एहिमे प्रथम जखन अहं-प्रेरित होइत अछि तखन ओकरा निकृष्ट कहब मुदा यदि ओ परिष्कृत सौन्दर्य-भावनासँ प्रेरित हो तखन ओकरा उत्कृष्ट मानब। परिष्कृत सौन्दर्य-भावना एक तँ प्राचीन कालसँ सम्पूर्ण मानव समाजमे अथवा कोनहु क्षेत्र-विशेषमे बनैत बनैत रूढ़ भऽ गेल अछि; दोसर युग-विशेषक आचार-विचार किंवा संस्कारक आधार पर बनैत रहैत अछि। एहिमे रूढ़ जे वृत्ति होइत अछि सैह शास्त्रक रूपमे मान्य होइत अछि, जेना हमरा लोकनिक ओहिठाम रस, अलंकार आदिक दृष्टिसँ परीक्षण शास्त्रीय समीक्षा बूझल जाइत अछि। एकरा हमरालोकनि शास्त्रीय समीक्षा बूझल जाइत अछि। एकरा हमरालोकनि शास्त्रीय अथवा रूढ़ तुला कहब। दोसर रुचि ओ थिक जे मानव समाजक सार्वभौम, सार्वदेशिक, ओ सार्वकालिक हितसँ प्रभावित होइत अछि ओ किछु तँ युग-विशेषक वृत्ति ओ आचार-विचारक अनुसार भावित होइत अछि। एकरा हमरा लोकनि सामाजिक तुला कहब। एहिमे व्यापक रूपसँ यैह द्रष्टव्य होइत अछि जे अमुक रचना सम्पूर्ण मानव-समाजक दृष्टिसँ हितकर, सुखकर ओ आनन्दकर अछि वा नहि ? एहिसँ ककरो अहित वा अकल्याण तँ ने होयत ? परन्तु ताहूसँ विशेष रूपेँ एहिमे द्रष्टव्य होइत अछि जे ओहि युग-विशेषक रुचि-भावना तथा आचार ओ विचारक अनुकूल ओ रचना स्वस्थ साहित्यक अन्तर्गत आबि सकैत अछि वा नहि।

परन्तु समीक्षाक स्वरूप रूपायित होइत अछि ओहि प्रयोजनसँ जकरा दृष्टिमे राखि समीक्षावृत्तिमे केओ प्रवृत्त होइत अछि। बहुतो समीक्षा तँ अपन कृतिकेँ बुझयबाक निमित्त, ओकर समर्थनक प्रयोजनसँ लिखल गेल अछि, लिखल जाइत अछि। एकर मूलमे रहैत अछि कोनहु कल्पनात्मक साहित्यक महत्त्व सिद्ध करब। परन्तु पूर्वहु समयमे ओ एमहर आबि मार्क्सवादी समीक्षाक बड़का प्रयोजन रहैत अछि लेखककेँ पथ-प्रदर्शन करब तथा लोक-रुचिक परिष्कार करब। एकर तात्पर्य भेल जे समीक्षामे ओ आदेश

रहय जे लेखक ओकर अनुसरण करथि तथा जनता कोन वस्तुकेँ प्रिय ओ रुचिकर बूझि स्वीकार करय अर्थात् जनताक रुचिकेँ एहन परिष्कृत कऽ देल जाय जे समीक्षक जकरा श्रेष्ठ, सुन्दर, भव्य ओ रुचिकर बुझथि, जनता सेहो ओकरहि श्रेष्ठ, सुन्दर, भव्य ओ रुचिकर बुझय। समीक्षाक एकटा नव रूप चलल अछि जकर एकमात्र प्रयोजन रहैत अछि ''अभिप्रशंसन''। परन्तु मुख्यतः दू गोट प्रयोजन एहन अछि जे प्रायः सर्वमान्य होयत ओ से थिक समीक्षा द्वारा लेखक ओ जनताक सेवा। कालिदासक सुप्रसिद्ध उक्ति जे ''आपरितोषाद् विदुषां न साधु मन्ये प्रयोगविज्ञानम्'' समीक्षाक द्वारा लेखकहिक सेवा द्योतित करैत अछि। समीक्षाक कार्य यैह थिकैक जे समाजमे स्वस्थ रुचि उत्पन्न कऽ तथा साहित्यक श्लाघ्य परिपाटी स्थापित कऽ समाजकेँ समुन्नत करी, ओकर शील ओ सदाचारकेँ व्यवस्थित करी। जहिना कारयित्री प्रतिभासँ लेखक लोककेँ आनन्द प्रदान करबाक साधन दैत छथिन, तहिना भावयित्री प्रतिभासँ सम्पन्न समीक्षक रचनाक परीक्षण कऽ लेखककेँ अपन उपलब्धिक मूल्याङ्कन कऽ दैत छथिन ओ पाठककेँ ओहि रचनाक गुणदोष सुझाय मार्गप्रदर्शकक कार्य कऽ दैत छथिन।

अतएव कोनहु रचनाक सम्यक् रूपसँ दर्शन ओ परीक्षण कऽ दोसराकेँ ओकर गुण एवं दोषक विवरण देब, ओहि दिशि प्रवृत्त करब, ओहन रचना करबाक हेतु दोसराकेँ प्रेरित करब, जनताक रुचिकेँ परिमार्जित करब, यैह सब भेल समीक्षाक प्रयोजन परन्तु से तखनहि सम्भव भऽ सकैत अछि जखन हम ओहि रचनाक उचित गुण-तत्त्व जानि ली, ओकर मूल्याङ्कन कऽ सकी। अतएव आवश्यक ई थिक जे मूल्याङ्कनक स्वरूप स्थिर हो, कोन मानदण्डसँ कोनहु रचनाक परीक्षण कयल जायत से स्पष्ट हो। कोनहु रचनाक गुण-तत्त्व वा मूल्य ओ विशेष नियोजन थिक जे ओहिमे उपस्थित भऽ ओकरा मूल्यवान्, महत्त्वपूर्ण, गुणान्वित कएकेँ ओकरा एहि योग्य बनाय दैत अछि जे ओहि दिशि लोकक ध्यान विशेष रूपसँ आकृष्ट हो। लेखक द्वारा प्रयुक्त वा स्थापित यैह नियोजन गुण-तत्व थिक जे श्रोता, पाठक वा दर्शककेँ आदिसँ अन्त धरि ओहिमे संलग्न रखने रहैत अछि, मन ऊबय नहि दैत अछि। साहित्यक आनन्द ओहिमे अन्तर्हित सुन्दर, अद्भुत, ओ असाधारण वस्तु, व्यक्ति, कथा, किंवा भाषाक एहन नियोजन होइत अछि जे पाठक, श्रोता, किंवा दर्शक कौतूहलसँ ओहिमे तन्मय भऽ कतहु भाषा-शैलीसँ, कतहु वर्ण्य विषयसँ, भावित होइत चल जाथि, तखन बुझबाक थिक जे ओहिमे

गुण-तत्त्व विद्यमान अछि। मूलतः हम अपन स्वतंत्र वृत्तिसँ गुण-तत्त्वक परीक्षण करी अथवा समाज द्वारा परम्परासिद्ध रूढ़ कसौटीसँ अन्वीक्षण करी, एतबा निश्चय जे हम जाहि गुणतत्वसँ भावित होयब ओ तीनिएटा होयत, सुन्दरता, अद्‌भुतता ओ असाधारणता। विभिन्न वर्ग वा व्यक्तिक बौद्धिक किंवा सांस्कृतिक योग्यता ओ परिस्थितिसँ ई गुणतत्त्व भिन्न भऽ सकैत अछि ओ तँहि ककरहु एक वस्तु पसिन्द होइत छैक, ककरहु दोसर। परन्तु सुन्दर, अद्‌भुत एवं असाधारण होयबाक हेतु आवश्यक छैक जे ओहिमे हमरा प्रांशुलभ्यता बूझि पड़य, ओ हमरा ततेक दूर बूझि पड़य जे हम ओहि दिशि एकटक देखैत रहि जाइ, मुहसँ बहराय जाय जे "अरे, की एहनो भऽ सकैत छैक!" यदि ई भावना नहि भेल ओ श्रोता, दर्शक वा पाठककेँ ओहन रचना करबाक शक्ति अछि ई होइक, तँ ओकरा ओहिसँ आनन्द नहि, ईर्ष्या होइतैक, ओ ओहिमे दोष ताकय लागत।

गुणतत्त्वक नियोजन अनेक प्रकारेँ होइत छैक। गुण-तत्त्वक अस्तित्व कतहु तँ प्रस्थापित वा चयन कयल वस्तु, सामग्री वा विषयमे रहैत अछि; कतहु भाषा-शैली किंवा वर्णन शैलीमे रहैत अछि; कतहु रचना-कौशल अर्थात् विषय प्रस्तुत करबाक शैलीमे रहैत अछि। एहि तीनूसँ भिन्न एक गोट आओर परीक्षा छैक जे ग्राहक अर्थात् श्रोता, पाठक वा दर्शकक योग्यता एवं मर्यादाक अनुसार रचनामे औचित्यक कतेक दूर धरि रक्षा भेल छैक। एही चारि प्रकारेँ, चारिमे सँ सब अथवा किछुकेँ लऽ, गुणतत्त्वक नियोजन होइत छैक। अतः गुणतत्त्व कोन अंशमे नियोजित छैक से बूझि ओही दिशि गुणतत्त्वक समीक्षण करबाक चाही। जाहि अंशमे गुणतत्त्व नहि छैक ताहिठाम बलपूर्वक गुणतत्त्वक अन्वेषण पाखण्ड-चेष्टा थिक। मूल्यांकनक मानदण्ड तँ होइत अछि वा भऽ सकैत अछि आनन्ददायकत्व अर्थात् रचनाकेँ देखि, पढ़ि वा सुनि सोझे सोझ तत्काल आनन्द प्राप्त होइत अछि वा नहि; कलात्मकता अर्थात् रचना-कौशल ततबा अद्‌भुत असाधारण ओ आकर्षक छैक वा नहि जे ओहूसँ आनन्दक उपलब्धि हो; सांस्कृतिक प्रभावशीलता अर्थात् ओहिसँ समाज ओ संस्कृति पर महत्त्वपूर्ण प्रभाव पड़ैत अछि वा नहि; नैतिकता वा धार्मिकता अर्थात् ओहिसँ ग्राहकक नैतिकता वा धार्मिकताक विकास एवं अनैतिकता वा अधार्मिकताक विनाश होइत अछि वा नहि; तथा व्यावहारिकता अर्थात् ओहि कृतिक द्वारा संसारमे मानव-सम्बन्धक निर्वाहक उचित मार्ग प्रदर्शित होइत अछि वा नहि। समीक्षक अपन अपन

दृष्टिसँ एहिमे कोनहु विशिष्ट मूल्यकेँ महत्त्व दैत रहलाह अछि वा दैत छथि मुदा गुणतत्त्वक कसौटी यैह थिक यद्यपि एहूमे सौन्दर्यवादी तत्त्व केवल प्रथममे, अधिक सँ अधिक दोसरहु धरिमे, प्राप्त भऽ सकैत अछि।

समीक्षा-वृत्तिक भिन्न-भिन्न प्रकार साहित्यशास्त्रीक मध्यमे प्रसिद्ध अछि– सबसँ निम्नकोटिक समीक्षक **'काकवृत्ती'** कहबैत छथि जे कौआ जकाँ केवल कटु कथा कहैत छथि, जनिक दृष्टि केवल मल वा दोषहि पर जाइत अछि। एहिसँ उत्कृष्टतर थिकाह ओ जे सर्वदा अपने दलक रीति नीतिकेँ श्रेष्ठतम मानैत अछि ओ दोसराकेँ अधलाह बूझि हुनका हानि पहुँचाय केवल अपन वा अपन दलक मतक स्वार्थपूर्ण पोषण करैत छथि। एहि प्रकारक समीक्षक **''कोकिलावृत्ती''** थिकाह, कारण, कोकिल अपन गेल्हक पोषण करयबाक निमित्त कौआक अंडाकेँ खसाय दैत छैक। वर्गवादी अर्थात् वर्गविशेषक समर्थन मात्र जे समीक्षाक मुख्य लक्ष्य मानैत छथि से एही श्रेणीक थिकाह। तेसर श्रेणी थिक **''मधुकरवृत्ति''** बलाक जे सब विकसित फूल पर बैसि-बैसि ओकर रस ग्रहण करैत छथि तथा दोसराकेँ पान करयबाक निमित्त ओहि रससँ मधु बनबैत छथि। एहन समीक्षक गुणग्राहक गुणदर्शी अभिप्रशंसक होइत छथि जे सब रचनासँ केवल गुणे गुण बहार कऽ ओकरा सभक समक्ष एहि रूपेँ उपस्थित करैत छथि जे लोक ओहिसँ लाभान्वित हो तथा स्थापित वस्तु स्वयं अपनामे नवीन, सुन्दर, हितकर भऽ जाय। एकरहि दृष्टिमे राखि भट्टनारायणक उक्ति अछि जे 'मधुकर इव मधुविन्दून विरलानपि भजत गुणलेशान्'। परन्तु सबसँ उत्कृष्ट थिकाह **''हंसवृत्ती''** जे निष्पक्ष निर्णायक भऽ सब प्रकारक पक्षपातसँ पृथक् रहि दूधकेँ दूध ओ पानिकेँ पानि बहार कऽ कहि दैत छथि, प्रत्येक रचनाक गुणदोषकेँ अत्यन्त विशद ओ स्पष्ट रूपसँ व्यक्त कऽ लोकक सम्मुख उपस्थित कऽ दैत छथि, जाहिसँ लोक गुणक ग्रहण कऽ लेअय तथा अवगुणसँ सावधान भऽ ओकरा त्यागि देअय। समीक्षाक एही उच्च आदर्शकेँ ध्यानमे राखि तँ हमरालोकनि हंसकेँ वैदुष्यक प्रतीक मानैत आयल छी ओ हंसकेँ सरस्वतीक वाहन कहैत छिऐनि। ई चारू प्रकारक समीक्षक क्रमशः **छिद्रान्वेषी वा निन्दक, पक्षभाक्ति, अभिप्रशंसक** ओ **निर्णायक** कहबैत छथि।

परन्तु समीक्षाक हेतु भावकता अर्थात् काव्यरुचि ओ सहृदयता रहब अत्यन्त आवश्यक थिक । भावक नहि रहलासँ अर्थात् काव्यमे रुचि नहि रहलासँ समीक्षामे प्राण नहि रहत, कारण, जखन रुचिए नहि तखन अध्ययन ओ समीक्षण सारहीन होयत । सहृदयताक अभावमे समीक्षा निष्पक्षो होअय तथापि उचित तँ नहिए भऽ सकैत अछि, कारण, जाहि व्यक्तिकेँ स्वयं कोनहु रचनाक रसग्रहण करबाक क्षमता नहि छनि से दोसराकेँ ओकर रस कोना दऽ सकैत छथि तथा दोसराकेँ रस देबाक वृत्तिए तँ समीक्षाक वास्तविक भित्ति थिक । एहने भावक सहृदयक समन्वित व्यक्तिवकेँ **''रसिक''** कहल जाइत अछि । जे रसिक नहि छथि ओ सरस कृतिकेँ बुझिए नहि सकैत छथि ओ जखन बुझवे नहि करथिन तखन समीक्षा की करताह ? तँहि तँ प्राचीन सूक्तिकार ब्रह्मासँ निवेदन करैत छथि जे आओर जे शत शत ताप कपाड़मे लिखबाक हो से लिखल जाय मुदा 'अरसिकेषु कवित्वनिवेदनं शिरसि मा लिख मा लिख मा लिख' ।

●

शब्दार्थ : वृत्ति = कार्य; विधि; विपर्यय = त्रुटि, गड़बड़ी; ईक्षण = विवेचना; प्रेय = प्रिय; अन्वीक्षण = विचार; खोज; प्राशुलभ्य = नमगर मनुष्यकेँ प्राप्य, श्लाघ्य = प्रशंसनीय; श्रेष्ठ; वैदुष्य = विद्वता; छिद्रान्वेषी = दोसरक दोष ताकनिहार; पक्षभावित = जकर विचार पक्ष वा समर्थनमे कयल गेल हो ।

प्रश्न ओ अभ्यास

1. समीक्षा की थिक ? पाठक आलोकमे लिखू ।
2. साहित्य ओ समीक्षाक की सम्बन्ध होइछ ?
3. कोन परिस्थितिमे कोनो निरर्थक वस्तुओ ग्राह्य भऽ जाइछ ?
4. समीक्षा-वृत्ति हेतु लेखक कोन-कोन आधारभूत वृत्ति सभक उल्लेख कयलनि अछि ?
5. समीक्षाक मूल प्रेरणा शक्ति लेखक ककरा मानलनि अछि ?
6. साहित्य-समीक्षा हेतु 'रसिक' होयब किएक आवश्यक मानल गेल अछि ? लेखकक धारणाकेँ अपन शब्दमे लिखू ।

7. समीक्षकक कतेक प्रकारक उल्लेख लेखक कयलनि अछि ? एहिमे सबसँ उत्तम ककरा मानल गेल अछि ?

गतिविधि:

1. निम्नलिखित आधारभूत वृत्ति सभ पर तीन वाक्यमे टिप्पणी लिखू : चयन वृत्ति, जिज्ञासा वृत्ति एवं अहं वृत्ति।
2. पाठ्यपुस्तकमे आयल कोनो कथाक समीक्षा अपन शब्दमे लिखू तथा ओकर मूल्यांकन शिक्षकसँ कराऊ।
3. निम्नलिखित पंक्तिक भावकेँ स्पष्ट करू :
   "दोसराकेँ रस देबाक वृत्तिए तँ समीक्षाक वास्तविक भित्ति थिक।"
4. साहित्यक मूल्यांकन हेतु लेखक एक शास्त्रक आवश्यकता अनुभव करैत छथि। एकरा द्वारा साहित्यक कोन-कोन दृष्टिएँ समीक्षा कयल जाइछ ?
5. "निष्पक्षता समीक्षाक आत्मा थिक"– एहि कथनमे निहित लेखकक मान्यताकेँ स्पष्ट करू।

निर्देश :

(क) समीक्षा हेतु विद्वान लेखक जाहि-जाहि मानदण्डकेँ आवश्यक मानलनि अछि, सरल रूपेँ छात्रक ज्ञान-विस्तार करबाक अपेक्षा शिक्षकसँ कयल जाइछ।

(ख) शास्त्रीय तुला ओ सामाजिक तुलाक वैषम्यकेँ उदाहरण दएकेँ छात्र केँ बुझाओल जयबाक चाही।

(ग) गुण तत्त्व नियोजनक प्रति लेखकक धारणाकेँ स्पष्ट रूपेँ छात्रकेँ अवगत कराओल जाय।

(घ) "कोनहु साहित्यक समीक्षा ओहने रुचिकर होयबाक चाही जेहन कोनहु साहित्यक रसास्वादनमे भेटैत अछि"– अहाँ कतेक दूर धरि एहि कथनसँ सहमत छी ? अपन विचारसँ छात्रक ज्ञान-विस्तार करू।

(ङ) शिक्षकसँ अपेक्षा जे ओ साहित्यक विविध रूप, यथा-कथा, उपन्यास, कविता, महाकाव्य, खंडकाव्य, मुक्तक, निबन्ध आदिसँ छात्रकेँ परिचित करौताह।

□